DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
SRAP College, Barachakia

B.A. (Hons.) Part – III
Sub. – SANSKRIT
Paper – VII
Short Notes

5×4=20 Marks
Date – 11.07.2020

अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण —

5. स्वभावोक्ति अलङ्कार

काव्यसौन्दर्यविधायक धर्म अलङ्कार द्विविध कहे गये हैं — शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कार। अर्थालङ्कारों में सर्वप्रथम स्वभावोक्ति की परिगणना होती है। इसका लक्षण इस प्रकार है—

"स्वभावोक्तिरसौ चारु यथावद्वस्तुवर्णनम्।"

अर्थात् किसी वस्तु का यथावत सुन्दर वर्णन करने पर स्वभावोक्ति अलङ्कार होता है। वस्तुगत क्रियारूपादि का चमत्कृति विधायक अन्यूनाधिक वर्णन को स्वभावोक्ति अलङ्कार कहते हैं। सुन्दर स्वभावोक्ति सहृदय पुरुषों के चित्त को आकृष्ट कर लेता है और स्वाभाविक आनन्द की अनुभूति कराता है। उदाहरण—

"ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति॥"

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के प्रथम अंक में मृग का का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त के द्वारा अपने सारथि से मृग का वर्णन है। मृग बाणों के भय से आगे दौड़ते हुए भी पीछे की ओर गर्दन मोड़-मोड़कर देखता है, पीछले आधे भाग को आगे की ओर संकुचित किये हुए तथा श्रम के कारण आधे चबाए गये कुशों को उगलता हुआ और लम्बी-लम्बी छलांगें मारता हुआ भाग रहा है। यह भय से उत्प्लुत्य मृग का स्वाभाविक वर्णन है, अतः यहां स्वभावोक्ति अलङ्कार है।

— 0 —